दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

टेस्ट-X (प्रश्नपत्र-2)

DTVF/18(JS)-HL-**HL10**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	*अधिकतम अंक: 250* *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): Ravi Kumar Sihag

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✓ | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.): _____

ई-मेल पता (E-mail address): _____

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 10 - 13/09/18

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2018] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2018]:

1	1	3	9	4	7	9

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): Ravi Sihag

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): _____ टिप्पणी (Remarks): _____

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

मूल्यांकन की पद्धति

प्रिय अभ्यर्थियों,

आपकी उत्तर-पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करते हुए परीक्षक-समूह के सदस्य निम्नलिखित निर्देशों का ध्यान रखते हैं। आप भी इन्हें ध्यान से पढ़ें ताकि आप अपने प्राप्तांकों का तार्किक कारण समझ सकें।

परीक्षकों के लिये निर्देश

1. मूल्यांकन में अंकों का वही स्तर रखा जाना चाहिये जैसा संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) के परीक्षकों द्वारा रखा जाता है।
2. सामान्य अध्ययन का जो उत्तर हर दृष्टिकोण से सटीक व उत्कृष्ट है; उसे अधिकतम 60% अंक दिये जाने चाहियें क्योंकि आयोग द्वारा किये जाने वाले मूल्यांकन में भी इससे अधिक अंक मिलना लगभग असंभव है। वैकल्पिक विषयों के उत्कृष्ट उत्तरों तथा श्रेष्ठतम निबंधों में अधिकतम 70% तक अंक दिये जा सकते हैं।
3. कृपया अंकों का वितरण निम्नलिखित तालिका के अनुसार करें-

उत्तर का स्तर (Standards of Answer)	सामान्य अध्ययन में अंक-स्तर (Marks Standard G.S.)	वैकल्पिक विषय तथा निबंध में अंक-स्तर (Marks Standard - Optional Subject and Essay)
उत्कृष्ट (Excellent)	51-60%	61-70%
बहुत अच्छा (Very Good)	41-50%	51-60%
अच्छा (Good)	31-40%	41-50%
औसत (Average)	21-30%	31-40%
कमज़ोर (Poor)	0-20%	0-30%

4. कृपया उत्तर में निम्नलिखित गुणों को विशेष प्रोत्साहन दें-
   - प्रश्न की सटीक समझ व उत्तर की व्यवस्थित रूपरेखा
   - संक्षिप्त, टू-द-पॉइंट लेखन शैली
   - प्रामाणिक तथ्यों का समुचित उपयोग
   - अधिकतम जरूरी बिंदुओं का समावेश
   - सरकारी दस्तावेजों (मंत्रालयों/आयोगों की रिपोर्ट्स, पॉलिसी पेपर्स आदि) के संदर्भों की चर्चा
   - प्रभावी भूमिका व निष्कर्ष
   - समकालीन घटनाओं/प्रसंगों को उत्तर से जोड़ना
   - दृष्टिकोण में संतुलन, समावेशन व गहराई
   - अच्छी, साफ-सुथरी हैंडराइटिंग
   - भाषा में प्रवाह
   - आवश्यकतानुसार डायग्राम्स, नक्शों आदि का प्रयोग
   - तकनीकी शब्दावली का सटीक उपयोग
   - सुंदर प्रस्तुति शैली (छोटे पैराग्राफ्स रखना, महत्त्वपूर्ण शब्दों को अंडरलाइन करना आदि)
   - विराम चिह्नों का समुचित प्रयोग
   - भाषा में वर्तनी व व्याकरण की शुद्धता
5. टॉपर्स के अनुभव बताते हैं कि उत्तर की विषयवस्तु अच्छी होने पर आयोग के परीक्षक शब्द-सीमा के थोड़े बहुत उल्लंघन पर अंक नहीं काटते हैं। कृपया आप भी इसी दृष्टिकोण के अनुसार अंक-निर्धारण करें।

Method of Evaluation

Dear Candidates,

While assessing your answer-scripts, the evaluators are required to follow the given instructions. You should also read them carefully to understand the logic behind the marks obtained by you in the tests.

Instructions for the Evaluators

1. The level of marks while evaluating the answers should be kept as per UPSC (Union Public Service Commission) standards as far as possible.
2. The answers of General Studies which are accurate and excellent from every perspective should be awarded a maximum of 60% marks as it is almost impossible to get more than that in actual UPSC examination. Excellent answers in optional subjects and the best written essays can be awarded a maximum of 70% marks.
3. Please assign the marks according to the following table-

4. Please devote special attention to the following qualities in an answer–
   - Accurate understanding of the question and systematic presentation of the answer
   - Crisp and to the point writing style
   - Adequate use of authentic facts
   - Inclusion of all the important points
   - Citing of relevant facts and figures from relevant official documents (Ministries /Commissions Reports, Policy Papers etc.)
   - Effective introduction and conclusion
   - Linking of current events and situations with the answer
   - Balance and depth in answer-writing
   - Legible and clean handwriting
   - Flow of language
   - Use of diagrams, maps etc
   - Precise use of technical terminology
   - Beautiful presentation style (small paragraphs, underlining important words etc.)
   - Proper use of punctuations
   - Correct spellings and right use of grammar
5. Experience of UPSC toppers also indicates that if the content of the answer is good, the UPSC examiners do not cut the marks on slight violations of the word-limit. Please award marks strictly according to the above-mentioned instructions.

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Section–A

1. निम्नलिखित काव्यांशों की लगभग 150 शब्दों में ससंदर्भ व्याख्या कीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) गदराने तन गोरटी, ऐपन-आड़ लिलार।
हूठयौ दै, इठलाइ, दृग करै गँवारि सुवार।।

प्रस्तुत दोहा रीतिकाल के प्रमुख कवि 'बिहारीलाल' की रचना 'बिहारी सतसई' से उद्धृत है।

प्रस्तुत दोहे में बिहारी ने ग्रामीण स्त्री की सुन्दरता के वर्णन के साथ-साथ उसकी ग्राम्यता पर व्यंग्य भी किया है।

बिहारी ग्रामीण स्त्री की सुन्दरता का वर्णन करते हुए कहते हैं कि उस स्त्री का सम्पूर्ण शरीर भरा हुआ है तथा उसके मस्तक पर सुंदर टीका भी लगाया हुआ है जो उसके सौन्दर्य में चार चाँद लगा रहा है।

बिहारी कहते हैं कि जब वह

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।
(Please don't wr anything in this

स्त्री अपनी अदा से इठलाती है तो उसके सुन्दर नेत्र भारी मार करते हैं और देखने वाले के हृदय को चीर डालते हैं।

विशेष :- (i) बिहारी ने अपने एक अन्य दोहे में इसी प्रकार की पंक्तियों में एक नागरी महिला के गाँव में बसने का मजाक उड़ाया है -

"नागरी विविध विलास तजी, बसी गवेलिन माँहि
मूढनि में गनीबी की तू, हूठ्यो दे इठलाई।"

(ii) 'गँवारि' शब्द से ग्रामीण जीवन पर ~~व्यंग्य~~ व्यंग्य किया गया है।
(iii) देह के स्थूल सौन्दर्य वर्णन में बिहारी का कोई सानी नहीं है।
(iv) बिहारी के दोहों में शब्दों की तराश विस्मय पैदा करती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) ऐसे क्षण अन्धकार घन में जैसे विद्युत
जागी पृथ्वी-तनया-कुमारिका-छवि, अच्युत
देखते हुए निष्पलक, याद आया उपवन
विदेह का,-प्रथम स्नेह का लतान्तराल मिलन
नयनों का-नयनों से गोपन-प्रिय सम्भाषण,-
पलकों का नव पलकों पर प्रथमोत्थान-पतन,-
काँपते हुए किसलय,-झरते पराग-समुदय,-
गाते खग-नव-जीवन-परिचय-तरु मलय-वलय,-
ज्योति:प्रपात स्वर्गीय,--ज्ञात छवि प्रथम स्वीय,-
जानकी-नयन-कमनीय प्रथम कम्पन तुरीय।

प्रस्तुत पद्यांश हिन्दी साहित्य के छायावादी युग (1918- 1936) के शिखर कवि 'सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला' की कालजयी कविता 'राम की शक्ति पूजा' से लिया गया है।

इन पंक्तियों में निराला ने युद्धोपरांत सानु-सभा के दृश्य में पराजय-बोध से पीड़ित राम के मन में सीता की सुंदर स्मृतियों के मनोहर चित्र खींचे हैं।

युद्ध के बाद संध्या के समय में संशयग्रस्त राम के मन में सीता की

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
Please do not write anything except the question number in this space)

की स्मृति- जागृत होती है। राम को जनकपुरी के उद्यान के दृश्य याद आते हैं। सीता को देखने का दृश्य, नेत्रों का मिलन, पेड़-पौधों का सौन्दर्य, जानकी की सुन्दर छवि आदि सभी स्मृतियाँ राम के मन को पुलकित करती हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष :- (i) प्रकृति वर्णन में हास्यादी प्रभाव पूर्णता में परिलक्षित होता है 'काँपते हुए किसलय, झरते पराग समुदय'

(ii) 'स्मृति बिंबों' के साथ 'बिंबों की कोमलता' देखते ही बनती है।

(iii) प्रथम पंक्ति में उत्प्रेक्षा की छटा दर्शनीय है।

(iv) खड़ी बोली की तन्मयता, लयात्मकता, कोमल प्रकृति का सशक्त उदाहरण इन पंक्तियों में दिखाई पड़ता है।

(v) सीता के स्मृतियों से ऊर्जा प्राप्त करना राम की 'पत्नी-प्रतिबद्धता' का परिचायक है।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) उन्नति तथा अवनति प्रकृति का नियम एक अखण्ड है,
चढ़ता प्रथम जो व्योम में गिरता वही मार्तण्ड है।
अतएव अवनति ही हमारी कह रही उन्नति-कला,
उत्थान ही जिसका नहीं उसका पतन ही क्या भला?

प्रस्तुत पंक्तियाँ हिंदी युग के सशक्त हस्ताक्षर एवं राष्ट्रकवि 'मैथिलीशरण गुप्त' की प्रमुख उद्बोधनमूलक कविता 'भारत-भारती' से उद्धृत है।

प्रस्तुत पंक्तियों में गुप्त जी ने भारत के अतीत की महानता एवं वर्तमान के पतन की चर्चा की है।

गुप्त जी कहते हैं कि समय के साथ प्रगति और पतन प्रकृति का अनिवार्य नियम है। भारत ने भी अतीत में आसमान की बुलंदियों को छूआ किन्तु वर्तमान में उसकी दशा पतनोन्मुख है। अतः जिस वस्तु का पतन होता है, उसमें निहित है

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कि उसने कभी ऊँचाइयों का स्पर्श भी किया है और आज के भारत की दुर्दशा इसके प्राचीन अतीत के गौरव की ओर इशारा कर रही है।

विशेष :- (i) 'अतीत' एवं वर्तमान में गहरा 'कन्ट्रास्ट' दिखाया गया है ताकि पाठक की भावनाओं को झकझोरा जा सके।

(ii) भाषा की सहजता इसकी उद्बोधनात्मक प्रवृत्ति को पुष्ट करने के लिये है, हालांकि इतिवृत्तात्मकता, गद्यात्मकता के भी दर्शन हो जाते हैं।

(iii) अंतिम पंक्ति में 'प्रश्नवाचक शैली' का प्रयोग किया गया है।

(iv) छंद एवं लय सर्वत्र विद्यमान नहीं है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) चुराता न्याय जो, रण को बुलाता भी वही है,
युधिष्ठिर! स्वत्व की अन्वेषणा पातक नहीं है।
नरक उनके लिए, जो पाप को स्वीकारते हैं;
न उनके हेतु जो रण में उसे ललकारते हैं।

प्रस्तुत पंक्तियाँ हिन्दी कविता की राष्ट्रवादी-सांस्कृतिक काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि 'रामधारीसिंह दिनकर' की युद्ध की समस्याओं को वर्णित करती कविता 'कुरुक्षेत्र' से ली गई हैं।

इन पंक्तियों में दिनकर ने युद्ध की नैतिकता के नकाबे में तोलकर कुछ परिस्थितियों में युद्ध की अनिवार्यता को स्वीकारा है।

युधिष्ठिर के विकल होने पर भीष्म उसे समझाते हैं कि अन्याय का दमन करने एवं न्याय की स्थापना के लिये युद्ध अनिवार्य है। न्याय की रक्षा के

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

लिये युद्ध लड़ने वाला नरक का भागी नहीं होता, बल्कि जो व्यक्ति अन्याय का विरोध न कर उसे स्वीकार करता है, नरक तो उसके लिये है। इस प्रकार अपने स्वत्व व समाज की रक्षा हेतु युद्ध अवश्यंभावी है।

विशेष :-
(i) युद्ध के पक्ष में मजबूत तर्क भीष्म ने दिये हैं।
(ii) तत्सम शब्दावली के साथ सहज शब्दों के प्रयोग और सुंदर तुकबंदी ने कविता की अर्थ-संप्रेषणीयता में वृद्धि की है।

प्रासंगिकता :- वर्तमान में क्षुद्र स्वार्थों हेतु लड़े जाने वाले संघर्षों (जैसे सीरिया का संघर्ष) में ये पंक्तियाँ प्रासंगिक हैं।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ड़) विषमता की पीड़ा से व्यस्त हो रहा स्पंदित विश्व महान,
यही दुख-सुख, विकास का सत्य यही भूमा का मधुमय दान।
नित्य समरसता का अधिकार उमड़ता कारण-जलधि समान,
व्यथा से नीली लहरों बीच बिखरते सुख-मणिगण द्युतिमान।

प्रस्तुत पद्यांश महाकवि छायावादी कवि 'जयशंकर प्रसाद' के आधुनिक भारत के प्रथम एवं एकमात्र 'भावप्रधान महाकाव्य' 'कामायनी' के श्रद्धा सर्ग से ली गई है।

पंक्तियों में प्रसाद ने श्रद्धा के माध्यम से संसार में विद्यमान विषमता के स्वरूप एवं कारणों पर प्रकाश डाला है।

श्रद्धा मनु को कहती है कि संसार में सुख एवं दुखों का मूल कारण जग में व्याप्त विषमता ही है। इसी विषमता के कारण महान विश्व में पीड़ा एवं समरसता का अभाव उत्पन्न होता

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

है। इन अभावों की प्रेरणा ही व्यक्तियों में समानता के अधिकार हेतु प्रेरित करती है जिससे संसार मानवों के कर्मों से प्रगतिपथ पर आरूढ़ होता है।

विशेष: (i) प्रथम पंक्ति में 'मार्क्सवादी चिंतन' का प्रभाव दिखाई पड़ता है।

(ii) विषमता से उत्पन्न समता के बीजों को प्रकाशमान मणियों की उपमा दी गई है।

(iii) भाषा तात्समिकता, लाक्षणिकता से युक्त कोमल एवं अर्थगर्भत्व से युक्त है।

प्रासंगिकता :- आधुनिक समय में ऑक्सफैम सर्वे की रिपोर्ट भी विश्व में व्याप्त भयकर असमानता की ओर इशारा कर रही हैं। हालांकि प्रसाद का संकेत बाह्य एवं आंतरिक दोनों विषमताओं की ओर है।

4. (क) 'ब्रह्मराक्षस' कविता में अभिव्यक्त मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी के आत्मसंघर्ष पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

मुक्तिबोध द्वारा रचित कविता ब्रह्मराक्षस एक संश्लिष्ट एवं जटिल संवेदना की कविता है। इस कविता में उन्होंने ब्रह्मराक्षस एवं उसके सजल-उर शिष्य का प्रतीक लेकर 'मध्यवर्गीय बुद्धिजीवियों के आत्मसंघर्ष' का वर्णन किया है। इसी जटिल यथार्थ को प्रकट करने के कारण उनकी कविता को श्री वस्तुपरक लंबी कविता कहा जाता है।

कविता की प्रमुख समस्या है कि मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी अपने आत्मसंघर्ष के कारण परेशानी में रहते हैं। उनके मन के दोनों पक्ष अर्थात उनका 'इड' उन्हें सांसारिक सुखों, व्यक्तिगत लाभों की ओर धकेलता है जबकि उनका नैतिक मन अर्थात 'सुपरइगो' इनका

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

मजबूत है कि वे हर समस्या का जिम्मेदार खुद को ठहराते हैं। 'ब्रह्मराक्षस' भी इसी समस्या से पीड़ित है-

"आत्मचेतस, किन्तु
इस व्यक्तित्व में थी प्राणमय अनबन
विश्वचेतस बेबनाव"

'अंधेरे में' कविता से तुलना करें तो ब्रह्मराक्षस कविता का तेवर कुछ अलग है। इस कविता में आत्मसंघर्ष बाहरी व भीतरी मन के बीच में न होकर, पूर्णतः विश्वचेतस हो जाने का संघर्ष है। इस बिन्दु पर मुक्तिबोध सजल-उर-शिष्य के माध्यम से यह समझाते हैं कि व्यक्तित्व होना हर व्यक्ति के लिये आवश्यक है। जिसके पास व्यक्तित्व ही नहीं है, वह समाजवादी

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

क्रान्ति को देगा क्या? इस बिन्दु पर ब्रह्मराक्षस का संघर्ष 'अंधेरे में' कविता के संघर्ष से अलग हो जाता है-

"वे भाव-संगत, तर्क-संगत
कार्य सामंजस्य योजित
समीकरणों के गणित की सीढ़ियाँ
हम छोड़ दें उनके लिये।"

'ब्रह्मराक्षस' कविता में अन्तर्संघर्ष का एक और स्वरूप यह है कि वह अपने व्यक्तित्व विलयन के प्रयासों को समाज से अलग कटकर करता रहा एवं समाज हेतु कोई योगदान नहीं दे पाया। इसी प्रयास में ही अन्ततः त्रासद मृत्यु को प्राप्त हुआ।

"वह कोठरी में किस तरह
अपना गणित करता रहा
औ' मर गया।"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कविता का एक अन्य संघर्ष बुद्धिजीवियों का पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के लालचों से स्वयं को तटस्थ रखने का भी है। कवि बताते हैं कि पूंजीवादी लाभों को अर्जित करने पर भी नैतिक मन की चीखें कम नहीं होती -

"किन्तु समय बदला ... आया वह कीर्ति व्यवसायी
लाभकारी कार्य में से धन

× × ^ ×

धन अभिभूत अन्तः करण में से
सत्य की सौंई निरन्तर
चिलचिलाती थी।"

इस प्रकार कविता में मुक्तिबोध के मार्क्स के मध्यवर्गीय बुद्धिजीवियों के उत्तरदायित्व को न निभा पाने का आत्मसंघर्ष ब्रह्मराक्षस के प्रतीक के माध्यम से प्रतिस्थापित किया है।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) कामायनी में निहित जीवन-दर्शन पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रसाद दर्शनों के गहरे अध्येता रहे हैं। अपने समय की परिस्थितियों पर विचार करने पर प्रसाद इसी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि उनके समय की सबसे प्रमुख समस्या विषमता की है जो कि व्यक्ति के ज्ञान, इच्छा एवं क्रिया में सामंजस्य नहीं पाने की वजह से उत्पन्न होती है।

'कामायनी' महाकाव्य में भी प्रसाद ने इसी समस्या को मनुष्य की सर्वोच्च समस्या के रूप में वर्णित किया है-

"ज्ञान दूर कुछ क्रिया भिन्न है
इच्छा क्यों पूरी हो मन की
एक दूसरे से न मिल सकें
यह विडंबना है जीवन की।"

इसी समस्या के समाधान पक्ष को

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खोजने का प्रयास प्रसाद ने अपने काव्यों, चिंतन एवं विचारों के माध्यम से किया है। उनके अनुसार इस विषमता को समाप्त करने का एक ही उपाय है - 'आनंद की प्राप्ति'।

इसी लक्ष्य की प्राप्ति हेतु प्रसाद ने अपनी हर रचना में आचार्य अभिनवगुप्त द्वारा प्रतिपादित दर्शन 'आनंदवाद' या 'प्रत्यभिज्ञा दर्शन' या 'शैव अद्वैतवाद' को स्थापित किया है। इस दर्शन के अनुसार प्रकृति महाशक्ति की ही अभिव्यक्ति है, कोई मिथ्या नहीं है एवं मनुष्य का लक्ष्य सुख-दुःखों के मार्ग से ऊपर उठकर आनंद की प्राप्ति करना है।

कामायनी के आनन्द सर्ग में मनु एवं श्रद्धा इसी परिस्थिति में हैं-

"समरस थे जड़ या चेतन
सुंदर साकार बना था

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

चेतना एक विलसती
आनंद अखंड बना था।"

कामायनी में आनंदवादी दर्शन के अनुरूप मनु प्रारंभ में 'मनोमय कोश' का प्रतीक है जबकि श्रद्धा प्रारंभ से ही 'आनंदमय कोश' में निवास करती है। अन्त: में जाकर मनु और श्रद्धा दोनों आनंदमय कोश एवं शांभव स्थिति को प्राप्त कर सेवा-मार्ग पर लीन होते हैं।

आनंदवादी दर्शन होने के साथ साथ प्रसाद ने अन्य दर्शनों से भी दूरी नहीं बनाई है। जीवन में प्रतिस्पर्धा को स्पेंसर के दर्शन के माध्यम से, काम-भावना को फ्रॉयड या कामाध्यात्मवाद के माध्यम से तो विषमता को मार्क्सवादी दर्शनों के पुट से प्रदर्शित करने का साहस भी प्रसाद ने दिखाया है।

दृष्टि The Vision

या इस स्थान में प्रश्न
ा के अतिरिक्त कुछ
नखें।
ase do not write
hing except the
tion number in
space)

(ग) राष्ट्रीय-स्वाधीनता-आन्दोलन के परिप्रेक्ष्य में 'राम की शक्तिपूजा' पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में
कुछ न लिखें।
(Please don't write
anything in this space)

'राम की शक्ति-पूजा' ऐतिहासिक मिथकीय आवरण में रची गई संश्लिष्ट संवेदना की कविता है। कुछ विद्वान इसमें निहित प्रतिपाद्य को सीता की मुक्ति से जोड़कर देखते हैं, कुछ निराला के व्यक्तिगत जीवन से तो कुछ राष्ट्रीय-स्वतंत्रता संग्राम से।

सूक्ष्म विचार करने पर अन्य पक्षों के साथ-साथ यह कविता राष्ट्रीय-स्वतंत्रता संग्राम का स्थूल वर्णन तो नहीं करती परन्तु उनके आंतरिक मूल्य के रूप में और अप्रत्यक्ष रूप से इस आंदोलन को नई दिशा भी दिखाती है।

शक्ति-पूजा के राम का संबंध भारतीय नेतृत्व महात्मा गांधी से जोड़ा जा सकता है जबकि रावण का संबंध अंग्रेजी साम्राज्य से। कविता की सीता को

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भारतीय अस्मिता या स्वतंत्रता की भावना से जोड़ा जा सकता है।

कविता में 'अनिमेष राम विश्वजिद्दिव्य शर भंग भाव' को महात्मा गांधी की स्थिति से देखा जा सकता है। राम के हाथ बंधे हुए हैं एवं मुट्ठियों से रक्त बह रहा है तो महात्मा गांधी भी अपने आंदोलनों की विफलता से पराजय बोध, हताशा से घिरे हुए थे (उस समय) -

'स्थिर राघवेन्द्र को हिला रहा फिर फिर संशय
रह-रह उठता जग जीवन में रावण जय भय'

इस विफलता का कारण है - 'अन्याय जिधर है उधर शक्ति' अर्थात- अंग्रेजी साम्राज्य का अनैतिक होने पर भी ताकतवर होना।

इसके उपरान्त राम की विफलता को दूर करने का सुझाव विभीषण जामवंत ने दिया है - 'शक्ति की करो मौलिक कल्पना'। इसी प्रकार का सुझाव निराला तात्कालीन

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

राष्ट्रीय नेतृत्व को देते हुए प्रतीत हो रहे हैं।

राम की अराधना की कठोर प्रवृत्ति राष्ट्रनायक को भी कठोर साधना करने का संदेश देती है। अन्त में ~~पुष्प~~ दुर्गा द्वारा पुष्प उठा ले जाने पर धिक्कार होने के बावजूद 'वह एक और मन रहा राम का जो न थका' का खड़ा होना तत्कालीन स्वतंत्रता आंदोलन के नेतृत्व को जुझारूपन एवं अडिग रहने का सीख देता है।

अन्त में राम द्वारा अपने नेत्रोत्सर्ग का निर्णय भी आंदोलन के नायक को आत्मोत्सर्ग के लिये भी तैयार रहने की सीख देता है। 'करो या मरो' नारे के द्वारा महात्मा गांधी ने भी यही सीख दी थी।

इस प्रकार यह कविता स्वतंत्रता आंदोलन की घटनाओं व मूल्यों को गहरे स्तर पर धारण कर उसे नई दिशा भी प्रदान करती है।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Section–B

5. निम्नलिखित गद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में ससंदर्भ व्याख्या कीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) इस नयी सभ्यता का आधार धन है। विद्या और सेवा और कुल और जाति सब धन के सामने हेय हैं। कभी-कभी इतिहास में ऐसे अवसर आ जाते हैं, जब धन को आन्दोलन के सामने नीचा देखना पड़ता है, मगर इसे अपवाद समझिये। मैं अपनी ही बात कहती हूँ। कोई गरीब औरत दवाखाने में आ जाती है, तो घण्टों उससे बोलती तक नहीं, पर कोई महिला कार पर आ गयी, तो द्वार तक जाकर उसका स्वागत करती हूँ। और उसकी ऐसी उपासना करती हूँ, मानो साक्षात् देवी है।

प्रस्तुत गद्यांश हिन्दी उपन्यास धारा के शिखर पुरुष 'प्रेमचन्द' के अंतिम एवं कालजयी महाकाव्यात्मक उपन्यास 'गोदान' से लिया गया है।

इन पंक्तियों में प्रेमचन्द ने मिस मालती के माध्यम से महाजनी सभ्यता के आगमन पर पैदा हुए मूल्यों एवं धन के प्रभाव का विवेचन किया है।

मिस मालती कहती हैं कि आज के इस मुनाफे की दुनिया में धन ही सब कुछ है। वह कुल-जाति सभी मूल्यों पर भारी पड़ता है। मालती आगे बताती

दृष्टि The Vision

है कि कैसे किसी दवाखाने में गरीब और अमीर के मध्य भेदभाव किया जाता है और केवल धन की शक्ति से ही व्यक्ति समाज की प्रतिष्ठा, सम्मान एवं यश का पात्र बन जाता है।

विशेष :- (i) भारतेन्दु ने भी अपने नाटक 'अंधेर-नगरी' में लिखा है -

'एक टका दो हम अपनी जात बेचते हैं'

(ii) प्रेमचन्द ने होरी के माध्यम से 'मेहनत की दुनिया' तो इन पंक्तियों के माध्यम से 'मुनाफे की दुनिया' का अन्तर्विरोध प्रस्तुत किया है।

(iii) मिस मालती की भाषा आभिजात्यता एवं तत्समता को धारण करती है।

बि-प्रासंगिकता :- आज के भौतिकवादी युग में भी निजी अस्पतालों एवं सरकारी अस्पतालों में इस प्रकार के दृश्य दिखना आम है।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) कविता ही मनुष्य के हृदय को स्वार्थ-सम्बन्धों के संकुचित मण्डल से ऊपर उठाकर लोक-सामान्य भाव-भूमि पर ले जाती है, जहाँ जगत् की नाना गतियों के मार्मिक स्वरूप का साक्षात्कार और शुद्ध अनुभूतियों का संचार होता है, इस भूमि पर पहुँचे हुए मनुष्य को कुछ काल के लिये अपना पता नहीं रहता। वह अपनी सत्ता को लोक-सत्ता में लीन किये रहता है। उसकी अनुभूति सबकी अनुभूति होती है या हो सकती है। इस अनुभूति-योग के अभ्यास के हमारे मनोविकार का परिष्कार तथा शेष सृष्टि के साथ हमारे रागात्मक सम्बन्ध की रक्षा और निर्वाह होता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत पद्यावतरण हिन्दी निबंधों के प्रतिनिधि निबंधकार 'आचार्य रामचन्द्र शुक्ल' के निबंध संकलन 'चिंतामनि' के प्रमुख काव्यशास्त्रीय निबंध 'कविता क्या है' से लिया गया है।

'मनुष्यता की उच्च भूमि' नामक खण्ड से उद्धृत इन पंक्तियों में शुक्ल जी ने कविता के मनुष्य के मन पर पड़ने वाले सुप्रभावों का वर्णन किया है।

शुक्ल जी ने कविता को 'भावयोग' की संज्ञा देते हुए कहा है कि बिना कविता के मनुष्य अपने भौतिक जगत के

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392354
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

स्वार्थों में जकड़ा हुआ रहता है। कविता का कार्य यह है कि वह ~~अ~~ मनुष्य को उसके क्षुद्र स्वार्थों की भूमि से उठाकर मनुष्यता की उच्च भूमि पर स्थापित कर देती है, जिस कारण उसके मनोभावों का परिष्कार होता है एवं वह संपूर्ण सृष्टि से एकत्व का अनुभव करता है।

विशेष (i) जयशंकर प्रसाद ने अपने नाटक स्कंदगुप्त में भी मातृगुप्त के माध्यम से इसी प्रकार की व्याख्याएँ करवाई हैं।

(ii) अज्ञेय की 'असाध्यवीणा' का प्रियंवद भी सृजन प्रक्रिया में अपने को भूल जाता है तो वीणा का संगीत सभी जनता को डूबाकर अपने स्वधर्म-पथ की ओर उन्मुख कर देता है।

(iii) 'विचारों की गूढ़ गुम्फित परंपरा,' तार्किक वाक्य प्रवाह एवं वैज्ञानिक शैली में कविता का महत्व स्थापित किया गया है।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) राष्ट्रनीति, दार्शनिकता और कल्पना का लोक नहीं है। इस कठोर प्रत्यक्षवाद की समस्या बड़ी कठिन होती है। गुप्त-साम्राज्य की उत्तरोत्तर वृद्धि के साथ उसका दायित्व भी बढ़ गया है; पर उस बोझ को उठाने के लिये गुप्त-कुल के शासक प्रस्तुत नहीं, क्योंकि साम्राज्य-लक्ष्मी को वे अब अनायास और अवश्य अपनी शरण आनेवाली वस्तु समझने लगे हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत पंक्तियाँ हिन्दी नाट्य परंपरा के प्रमुख नाटककार 'जयशंकर प्रसाद' ने राष्ट्रवादी नवजागरण प्रेरित नाटक 'स्कंदगुप्त' से ली गई हैं।

इन पंक्तियों में पर्णदत्त स्कंदगुप्त से गुप्त साम्राज्य की दशा के साथ-साथ शासकों की कर्त्तव्य-विमुखता का वर्णन कर रहा है।

नाटक के प्रथम खण्ड में पर्णदत्त स्कंदगुप्त से कहता है कि राजनीति किसी दर्शन के समान बौद्धिक व्यायाम की वस्तु नहीं है, उसका व्यावहारिक रूप अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है। गुप्त साम्राज्य में भी समृद्धि के

Copyright – Drishti The Vision Foundation

साथ-साथ शासकों के दायित्वों में अत्यधिक वृद्धि हुई है परन्तु विलास में डूबे शासकों का जनकल्याण में और राजनीति के प्रति कोई आकर्षण नहीं है। वे केवल धन के वशीभूत हो उठे हैं।

विशेष: मोहन राकेश ने अपने नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' में 'प्रियंगुमंजरी' से इस तरह का कथन कहलवाया है, हालांकि उसका मिज़ाज कुछ अलग है।
'राजनीति साहित्य नहीं है।'

(ii) गद्य होने के बावजूद प्रसाद की भाषा भावानुकूल एवं काव्यात्मकता को धारण करती है।

(iii) प्रसाद बताते हैं कि किस प्रकार धन की लालसा बड़े-बड़े शासकों के ईमान को तहस-नहस कर देती है।

(iv) प्रसाद की भाषा इतिहास के अनुरूप है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) दिव्यो, मैं मृत्यु से भय नहीं मानता...मृत्यु क्या है? अस्तित्व का अन्त! जिसका अस्तित्व नहीं, जिसे अनुभूति नहीं, वह भय भी अनुभव नहीं कर सकता। भय है जीवित रह कर पीड़ा और पराभव सहने में, भय है जीवन भर की पीड़ा और पराभव से। तुम्हें अंक में लेकर समाप्त हो जाने से कौन इच्छा अपूर्ण रह जायेगी? फिर उसमें भय क्या? वह सुखद अस्तित्व का सुखद अन्त है परन्तु मैं युद्ध में पराक्रान्त होकर, पराभूत होकर जीवन भर तिल-तिल कर मरने की कल्पना सहन नहीं कर सकता। जीवन की सार्थकता अधिकार और सामर्थ्य में ही है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत गद्यांश हिन्दी की प्रगतिवादी धारा के प्रमुख उपन्यासकार 'यशपाल' के ऐतिहासिक उपन्यास 'दिव्या' से लिया गया है।

उपर्युक्त गद्यांश में यशपाल ने पृथुसेन के माध्यम से मृत्यु एवं युद्ध के संबंधों का वर्णन कर युद्ध में निर्भयता से लड़ने को सार्थक कर्म बताया है।

सागल पर केन्द्रस के आक्रमण के समय पृथुसेन और दिव्या के मिलाप के समय पृथुसेन दिव्या को कहता है कि उसे मृत्यु का भय नहीं है क्योंकि कि मृत्यु आने पर उसके जीवन के समस्त

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

थान में प्रश्न
तिरिक्त कुछ

not write
xcept the
umber in

कृपया इस स्थान में
कुछ न लिखें।
(Please don't write
anything in this space)

कृपया इस
संख्या के
न लिखें।
(Please d
anything
question
this space

अभाव समाप्त हो जायेंगे। साथ में वह कहता है कि भागकर या छिपकर तुम्हारे बाहुपाश में मृत्यु को वरण करना कायरता होगी क्योंकि युद्ध के समय इस प्रकार के कृत्य सामर्थ्यहीनता को प्रदर्शित करते हैं। अतः युद्ध के समय लड़ना ही श्रेयस्कर है।

विशेष: (i) अश्पाल की भाषा के ऐतिहासिकता के स्वरूप को खंडित नहीं होने दिया है। तत्सम शब्दों का प्रयोग दर्शनीय है।

(ii) सूत्र वाक्यों का सुंदर प्रयोग, जो मृत्यु एक ही वाक्य में परिभाषित कर देते हैं 'मृत्यु क्या है? अस्तित्व का अंत..'

(iii) 'प्रश्नवाचक शैली' का सुंदर प्रयोग किया गया है।

(iv) चुस्त वाक्य विधान, विराम चिह्नों के सुंदर प्रयोग ने अर्थ-संप्रेषण में वृद्धि की है।

इस स्थान में प्रश्न के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ड़) पर प्यार की बेसुध घड़ियाँ, वे विभोर क्षण, तन्मयता के वे पल, जहाँ शब्द चूक जाते हैं, हमारे जीवन में कभी नहीं आये। तुम्हीं बताओ, आये कभी? तुम्हारे असंख्य आलिंगनों और चुम्बनों के बीच भी, एक क्षण के लिये भी तो मैंने कभी तन-मन की सुध बिसरा देने वाली पुलक या मादकता का अनुभव नहीं किया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत पंक्तियाँ 'नई कहानी' काव्यधारा में राजेन्द्र यादव द्वारा संकलित नई कहानियों के संकलन (एक दुनिया: समानान्तर' की प्रमुख कहानीकार 'मन्नु-भंडारी' की कहानी 'यही सच है' से ली गई है।

पंक्तियों में कलकत्ता से लौटने के समय दीपा की मनः स्थिति एवं उसके मन में निशीथ के प्रति उमड़े प्रेम के कारण बदले उसके भावों का वर्णन किया गया है।

कलकत्ता में निशीथ से मिलने पर दीपा के मन में प्रेम की बीज पुनः उत्पन्न होते हैं। संजय के प्रेम और निशीथ के प्रेम को तौलने के

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

बाद वह सोचती है कि संजय का प्रेम तो सुरक्षात्मक दृष्टि को ही धारण करता था। असली प्रेम तो निर्जीव का ही है जो उसकी भावनाओं को बराबर तृप्त करता है। भावनाओं की गर्मी तो निर्जीव के साहचर्य में ही है, संजय के साहचर्य में नहीं।

विशेष (i) प्रेम में निहित विचलन का सुंदर वर्णन किया गया है।

(ii) चेतना-प्रवाह शैली का सुंदर प्रयोग किया गया है।

(iii) प्रश्नवाचक शैली के साथ आत्मकथन शैली और विराम चिह्नों के सुंदर प्रयोग ने अर्थ में जान डाल दी है।

(iv) भावनात्मक एवं सुरक्षात्मक प्रेम में तुलना की गई है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) 'गोदान' अपने समय का ही नहीं, आनेवाले समय की भी प्रसव-गाथा है।'- इस मत का अनुशीलन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कोई भी विधा अपने समय के जीवन-वृत्त को चित्रित तो करती ही है परन्तु किसी भी कालजयी रचना की पहचान यह होती है कि वह देश-काल की चौहद्दियों का अतिक्रमण कर हर समय अपनी प्रासंगिकता सिद्ध करती है। गोदान की प्रासंगिकता भी इसी सन्दर्भ में दर्शनीय है।

गोदान का रचनाकाल (1936) उस समय का है जब पुराने सामंतवादी मूल्य खंडित हो रहे थे एवं नये पूंजीवादी एवं आधुनिक मूल्यों की ज़मीन तैयार हो रही थी। प्रेमचन्द ने अपने समय के संक्रमण के तनावों और आने वाले समय की प्रसव पीडा का चित्रण कर एक दूर-दृष्टि का परिचय दिया है।

गोदान में अपने समय की समस्त

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
.../drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

समस्याओं को प्रेमचन्द ने कागज पर उतार दिया है। समस्या चाहे किसानों की हो, महिलाओं की हो, बेरोजगारी की हो, धार्मिक कुरीतियों की हो या अन्य कोई भी – समस्त समस्याएँ अपनी पूर्ण यथार्थता के साथ उपन्यास में उपस्थित हैं।

गोदान का होरी मरजाद, धर्म, बिरादरी के दबावों के आगे घुटने टेक देता है तो गोबर श्रमिक बनकर कारखाने के अमानवीय दशाओं में काम करने को अभिशप्त है। झुनिया ने विधवा होने की पीड़ाओं को झेला है तो सिलिया के परिवार ने दलित होने के कुप्रभावों को। यही नहीं साम्प्रदायिकता (झुनिया के पति की मौत), वेश्यावृत्ति (मेहता – मिर्जा खुर्शेद की बातचीत) जैसी सूक्ष्म समस्याएँ भी प्रेमचन्द की आँखों से ओझल नहीं हुई हैं।

कृपया इस स्थान
कुछ न लिखें।
(Please don't writ
anything in this s

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

परन्तु प्रेमचन्द यहीं तक नहीं रुके हैं अपनी भविष्य दृष्टि से उन्होंने आने वाले युग की समस्याओं को भी पहचानकर उपन्यास कथा-क्षेत्र में जगह दी है जैसे

(क) पीढ़ी संघर्ष की समस्या :- गोबर-होरी की बातचीत में यह समस्या पूर्णतः व्यंजित होती है।

"हम सब जात-बिरादरी के चाकर हैं उसके बाहर नहीं जा सकते।" (होरी)

"रुपये हैं तो न हुक्का-पानी का काम है न बिरादरी का। ये दुनिया पैसे की है, हुक्का-पानी कोई नहीं पूछता" (गोबर)

(ख) नारी संघर्ष :- प्रेमचन्द ने मेहता के भाषण, सरोज, मालती जैसे चरित्रों के माध्यम से आगामी नारीवादी आंदोलन का वर्णन भी किया है।

(ग) लोकतंत्र की विद्रूपताओं एवं वर्गगतचरित्र

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

का वर्णन करने के साथ-साथ खन्ना जैसे चरित्रों के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम के वर्गगत चरित्र का उद्घाटन भी प्रेमचन्द ने किया है।

(घ) आगामी पूंजीवादी व्यवस्था का चित्रण :- गोदान डूबते हुए सामंतवाद की कथा है साथ ही प्रेमचन्द ने मालती के पिता एवं मिस्टर खन्ना के माध्यम से आने वाली पूंजीवादी व्यवस्था के आंतरिक चरित्र को भी उघाड़ा है।

(ङ) रामसेवक के माध्यम से किसान विद्रोह, राय साहब के माध्यम से जमींदारी व्यवस्था के उन्मूलन, ओंकारनाथ के माध्यम से पत्रकारिता के विकास होने की घटनाएँ जो एक प्रकार से आज के युग का पर्यायवाची प्रतीत होता है। प्रेमचन्द ने वर्षों पहले ही देख लिया था।

अतः उपर्युक्त चर्चा साबित करती है कि गोदान की कालजयता निरापद है।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) उपन्यास-कला की दृष्टि से 'महाभोज' उपन्यास की विशिष्टताओं को रेखांकित कीजिये।15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

स्वतंत्रता के बाद लिखा गया उपन्यास महाभोज अपने राजनीतिक सरोकार विवेचन की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान रखता है। मन्नू-भंडारी ने महिला होते हुए भी पुरुष वर्चस्व राजनीति की चरित्र का पर्दाफाश कर अपनी सूक्ष्म-दृष्टि का परिचय दिया है।

उपन्यास-कला की दृष्टि से महाभोज :-

(क) कथानक :- महाभोज संक्षिप्त कलेवर में रचा गया नाटक है जिसकी मूल कथा बिसू की मौत से लेकर बिंदा के विद्रोह से होते हुए मि. सक्सेना के व्यक्तित्वांतरण तक पहुँचती है और उस दुर्निवार लपकती अग्निलीक को जलाये रखती है। अन्य सभी कथाएँ - सुकुल बाबू, दा साहब आदि की कथाएँ मूल कथा को आगे बढ़ाने में ही काम आती हैं।

विराम-गति की दृष्टि से भी उपन्यास

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

एकदम उचित है। अन्त में सक्सेना का ट्रेन में चढ़ना उपन्यास के अन्तहीनता को प्रदर्शित करता है।

(ख) उद्देश्य :- लेखिका का उद्देश्य शिल्प साधना नहीं बल्कि अपने समय की राजनीतिक विद्रूपताओं को नंगेपन के साथ प्रस्तुत करना था। सक्सेना का व्यक्तितत्वांतरण भी 'सहज यथार्थ' न सही तो 'दुर्लभ यथार्थ' अवश्य है

(ग) भाषा शैली -

⊕ प्रसंगों व पात्रों के अनुसार परिवर्तनशील भाषा -

- 'दिस इज ए क्लियर केस ऑफ सुसाइड' (दा साहब)

- 'कबो-कबो तो भीतर-भीतर कलपत-कलपत रहे सरकार' (हीरा)

⊕ मुहावरों का प्रयोग :- लेने के देने पड़ना, हवा निकलना जैसे मुहावरों ने अर्थ में वृद्धि की है

⊕ अन्य - सूक्त भाषा, व्यंग्यों का प्रयोग

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भी भरपूर मात्रा में किया गया है।

(घ) चरित्र :- महाभोज के चरित्र सहज एवं स्वतंत्र हैं, लेखिका के हाथों की कठपुतली नहीं हैं। समस्त चरित्र परिस्थितियों के हाथों चालित हैं। आदर्शवाद का तत्व न के बराबर है।

चरित्र चित्रण शैलियाँ भी लेखिका ने अनेक रखी हैं-

- "बात को अपने मन से, मन में चलने वाली हलचल से काटकर भी किया जा सकता है, यह गुर कोई दा साहब से सीखे।"
(लेखिका द्वारा वर्णन)

- 'महेश खुद को रोक नहीं पाया, टूट पड़ा वह'
(स्थितियों द्वारा वर्णन)

(ङ) नाटकीयता :- धारावाहिकों की लेखिका होने के असर उपन्यास पर भी पड़ा है व नाटकीयता के दर्शन अनेक स्तरों पर होते हैं। इस प्रकार उपन्यास के कलातत्वों की दृष्टि से यह उपन्यास बेजोड़ है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'शुक्लजी गंभीर प्रकृति के मननशील व्यक्ति थे, किंतु निबंधों में स्थान-स्थान पर हास्य, व्यंग्य तथा विनोद की चुटकियाँ लेकर विषय को रंजक बनाया है।' विवेचन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

निबंध लेखन में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का स्थान अत्यन्त ऊँचा है। अपने समय के पहले के आत्माभिव्यंजक शैली, व्यक्तिगत प्रयोगों एवं स्थूल विचारों के निबंधों से क्षुब्ध शुक्ल जी ने एक नई निबंध शैली का प्रतिपादन किया। जिसमें चिंतनपरक निबंधों में विचारों की गूढ़ गुत्थियाँ परंपरा मिलती है साथ ही एक-एक पैरा में विचार - दबा दबा कर कसे गये हैं।

शुक्ल जी के निबंध इन कसौटियों पर पूरी तरह खरे उतरते हैं। निबंध चाहे 'श्रद्धा-भक्ति' हो या 'कविता क्या है' शुक्ल जी ने गंभीर चिंतनपरक वैज्ञानिक शैली के साथ-साथ भावनात्मक संबंधों को भी सहजता से प्रक्षेपित किया है। उन्होंने कहा

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

भी है-

"इस रचना में मेरी अन्तर्यात्रा में पड़ने वाले पड़ाव हैं। यात्रा के लिये निकलती रही है बुद्धि। पर हृदय को भी साथ लेकर।"

चिंतनपरक शैली के उदाहरण :- इस शैली का प्रयोग वहाँ दिखता है जहाँ शुक्लजी कोई निबंध प्रारंभ करते हैं या कोई नई अवधारणा स्थापित करते हैं जैसे- काव्य में लोकमंगल की साधनावस्था या मनोविकारों में सूक्ष्म भेद करते समय जैसे - श्रद्धा व भक्ति में भेद। इस शैली में सूत्र शैली का प्रयोग किया जाता है, वाक्यों का तार्किक क्रम विद्यमान रहता है एवं एक-एक शब्द की तराश की हुई होती है जैसे-

- "यदि प्रेम स्वप्न है तो श्रद्धा जागरण"
- 'काव्य में अर्थग्रहण मात्र से काम नहीं चलता। बिंबग्रहण अपेक्षित होता है।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भावनात्मक पक्षों की उपस्थिति :- हास्य व्यंग्य, विनोद की चुटकियाँ शुक्ल जी वहाँ प्रयुक्त करते हैं जहाँ पर बुद्धि थकती है। वहाँ हास्य अपनी प्रवृत्ति के अनुरूप क्षमा एवं कुछ कहता चला जाता है इस प्रकार यात्रा के श्रम का परिहार हो जाता है क्रोध, आवेश, व्यंग्य के क्षणों में भी भाषा का मिज़ाज बदल जाता है जैसे -

"वे उसी प्रकार से दुर्व्यसनी कहे जा सकते हैं जैसे शराबी, गंजेड़ी एवं चंडूबाज"

"यदि दूसरे के कल्याण के लिये किसी को भारी स्वार्थ त्याग करते देख हमारे मुंह से धन्य-धन्य भी न निकली तो हम समाज के किसी काम के नहीं।"

इस प्रकार शुक्ल जी की शैली 'विरुद्धों का सामंजस्य' धारण कर दोनों पक्षों को समाहित कर लेती है।

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) 'दिव्या' किसी देश की गौरवगाथा मात्र नहीं है, अपितु आगे की दिशा तलाशती है।' अपने विचार प्रस्तुत कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इतिहास के संबंध में यशपाल के विचार मार्क्सवादी बोध से प्रभावित है जिसके अनुसार -

"इतिहास घटनाओं के रूप में अपनी पुनरावर्ती नहीं करता। परिवर्तन का नियम ही इतिहास का तथ्य है।"

'दिव्या' के प्राक्कथन में इन पंक्तियों के अलावा कुछ पंक्तियाँ और भी है -

"इतिहास के तत्वों का चिंतन एवं मनन हम भविष्य के लिये संकेत पाने के लिये करते हैं। वर्तमान में स्वयं को असहाय पाकर भी अतीत में हम अपनी क्षमताओं का परिचय पाते हैं।

इन्हीं दो पंक्तियों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि -

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(क) यशपाल ने इतिहास का प्रयोग एक आवरण के रूप में किया है ताकि वर्तमान समस्याओं के समाधान के संकेत पाये जा सके।

(ख) यशपाल का उद्देश्य अतीत का महिमामंडन करना न होकर यह दर्शाना था कि अमुक समस्याएँ चिरकाल में भी विद्यमान थी। साथ ही, मारिश के माध्यम से यशपाल ने इन समस्याओं पर कटाक्ष भी किया है।

अब बात करते हैं दिव्या उपन्यास की। इस उपन्यास में यशपाल ने तात्कालिक ऐतिहासिक समाज की वीरता के मूल्यों (पृथुसेन के माध्यम से), कला एवं संस्कृति (मथुरा एवं सागल के वर्णन में) एवं साथ ही साथ शुरुआत में मराली की नाट्यकथा के माध्यम से भारतीय संस्कृति के उज्ज्वल पक्ष का चित्रण किया

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
Please do not write anything except the question number in this space)

है।
किन्तु मार्क्सवादी एवं अपने इतिहासबोध के अनुरूप यशपाल ने ग्रन्थ की कथा के रूप में निम्न पक्षों का समावेशन किया है -

(क) 'दिव्या' के माध्यम से नारी की दुर्दशा, दास प्रथा, वैश्यावृत्ति की समस्या पर प्रकाश डाला है। दिव्या का अंतिम निर्णय व वाक्य - नारी का मार्ग निवृत्ति नहीं, सृष्टि है' इसी सन्दर्भ में नारी समस्या के उपायों की तलाश का उदाहरण है।

(ख) मारिश के माध्यम से -
(अ) भाग्यवाद का खंडन किया है-
(आ) नारी - पुरुषों संबंधों की अन्योन्याश्रिता पर बल दिया है।
(इ) परलोकवाद का खंडन कर इहलौकवाद की स्थापना की है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"जिस स्थूल तत्यक्ष जगत और शरीर का अनुभव सम्पूर्ण जन करता है उसे भ्रम मानना और जिस ब्रह्म की कल्पना केवल ब्रह्मवादी ही करता है उसे सत्य मानना कहाँ तक युक्तियुक्त एवं तर्कसंगत है।"

(ग) बौद्ध, एवं ब्राह्मण धर्म की विसंगतियों को उजागर करने का कार्य भी यशपाल ने उपन्यास में किया है।

(घ) न्याय-व्यवस्था, राज्य व्यवस्था एवं विवाह-व्यवस्था में निहित विसंगतियों व उनके निराकरण का प्रयास भी किया गया है।

इस प्रकार यशपाल ने अपने उपन्यास में भूतकाल एवं भविष्यकाल को मिलाकर उपयोगितावादी दृष्टि से अतीत के साथ भविष्य के संकेतों हेतु रचनाकर्म किया है।

(ख) 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक की प्रासंगिकता पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

'आषाढ़ का एक दिन' नाटक एक ऐतिहासिक समय पर लिखा गया नाटक है। इस इतिहास में लेखक ने अपनी सृजन क्षमता का प्रयोग कर कल्पना के पुट से इसे कालजयी बना दिया है। नाटक के तीन काल देखे जा सकते हैं

(क) कालिदास का समय
(ख) रचना का समय
(ग) आज का समय

यदि प्रासंगिकता पर नज़र दौड़ायें तो आज के समय में भी यह नाटक पूरी तरह फिट बैठता है जैसे-

(क) आज के युग की सबसे बड़ी समस्या आधुनिक मनुष्य में निहित विसंगति, संत्रास, निर्णयहीनता की समस्या है। नाटक में राकेश ने कालिदास के माध्यम से इस समस्या का पूर्णता में चित्रण

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

किया है कि कैसे एक निर्णय जीवन को कष्टदायक बना देता है।

(ख) सत्ता व सृजनशीलता का द्वन्द्व :- कालिदास का धन के अभाव में अपनी इच्छा के विरुद्ध राज्याश्रय स्वीकार कर लेना आज के कलाकार की मानसिकता का द्योतक है। निराला जैसे कवि जहाँ पूरी जिन्दगी महत्व के लिये लड़ते हैं वहीं राजनेताओं के भाषण या सतही गीत लिखने वाले लेखक उच्च स्थान प्राप्त कर लेते हैं।

(ग) मानव-प्रकृति संबंध :- आज के उद्योग के युग में शहरी जीवन में प्रकृति को किस प्रकार एक वस्तु के रूप में समझा जाता है इसका उदाहरण राकेश ने प्रियंगु के माध्यम से नाटक में दिया है-

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision

पया इस स्थान में प्रश्न
ख्या के अतिरिक्त कुछ
लिखें।
lease do not write
ything except the
estion number in
is space)

कृपया इस स्थान में
कुछ न लिखें।
(Please don't write
anything in this space)

"चाहती थी कि इस प्रदेश का कुछ वातावरण साथ ले जाऊँ"

(घ) नौकरशाही की जड़ता जो आज की भी समस्या है, नाटक में अनुस्वार व अनुनासिक के माध्यम से प्रतिपादित की गई है।

(ङ) राजनीति की पहचान:- प्रियंगु के कथन - 'राजनीति साहित्य नहीं है, इसमें एक-एक क्षण का महत्व होता है' - आज के गठबंधन युग में नितांत प्रासंगिक है।

(च) आर्थिक अभावों में मल्लिका का वेश्या बन जाना हो या मल्लिका - अम्बिका का पीढ़ी संघर्ष, आज के सूचना क्रान्ति के युग में अपनी प्रासंगिकता सिद्ध करता है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि राकेश ने अपने सृजनात्मक कौशल से काल की सीमाओं को नाटक में ध्वस्त कर दिया है व आज के समय में इसे प्रासंगिक बना दिया है।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) रामविलास शर्मा के निबंध 'तुलसी साहित्य के सामंत-विरोधी मूल्य' के निहितार्थ पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान पर कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

रामविलास शर्मा ने अपने प्रसिद्ध निबंध 'तुलसी साहित्य के सामंत-विरोधी मूल्य' में तुलसी दास एवं उनकी कृतियों का नये तरीके से मूल्यांकन कर उनकी रचनाओं में निहित सामंत-विरोधी मूल्यों को स्थापित किया है।

उनके अनुसार आभिजात्यवादी एवं प्रगतिवादी दोनों आलोचकों ने तुलसी का गलत मूल्यांकन किया है। एक वर्ग उन्हें ब्राह्मणवादी व्यवस्था का पोषक मानता है तो दूसरा दलित-विरोधी।

भक्ति आंदोलन की उत्पति में आर्थिक-आधार पर विकसित होने को बताकर रामविलास शर्मा जी ने तुलसी के काव्य की निम्न विशेषताओं को समझाया है-

(क) तुलसी की वर्ण-व्यवस्था विरोधी मानना

की स्थापना शर्मा जी ने कवितावली के उत्तरकांड में निहित कुछ पंक्तियों के माध्यम से स्थापित किया है -

'धूत कहौ, अवधूत कहौ
रजपूत कहौ, जोलहा कहौ कोऊ'

(ख) तुलसी की नारी दृष्टि के आक्षेपों का जवाब उन्होंने यह कहकर दिया है कि ये सभी कथन खलनायक पक्ष की ओर से कहे गये थे जिससे तुलसी की मानसिकता का कोई सरोकार नहीं था। तुलसी ने तो नारी स्वतंत्रता का प्रतिपादन किया है।

"कत बिधि सृजी नारी जग माहिं
पराधीन सपनेहुँ सुख नाहिं।"

(ग) तुलसी समावेशी व्यवस्था के संस्थापक है। न केवल आर्थिक पक्ष बल्कि सामाजिक एवं राजनीतिक दृष्टि से भी तुलसी समतामूलक समाज की स्थापना करना चाहते हैं।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

~~प्रस्ति~~ "जासू राज प्रिय प्रजा दुखारी
सो नृप अवस नरक अधिकारी।"

"परहित सरिस धर्म नहीं भाई।"

(घ) रामचरितमानस ने शंबूक वध, सीता परित्याग प्रसंग हटाकर तुलसी ने प्रगतिशीलता का परिचय दिया है वहीं दूसरी ओर केवट, किरात प्रसंग में भी तुलसी के राम प्रगतिशील हैं।

इस प्रकार इन प्रसंगों द्वारा शर्मा जी ने तुलसीदास के काव्य के संबंध में नई दृष्टि प्रदान कर तुलसी के नायक राम के गुणों, मूल्यों को भारतीय जनता के स्वभावानुसार बताया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)